DELTA Pg No. 1
Date / /

अधिगमकर्ता का विकास

प्र. बुद्धि से आप क्या समझते हैं? बुद्धि की प्रकृति मापन एवं प्रकारों का वर्णन करें।

उ. -

बुद्धि का अर्थ एवं प्रकृति

प्रायः यह सुनने मे आता है कि वह व्यक्ति अधिक बुद्धिमान या उसकी बुद्धि अधिक तेज है या वह व्यक्ति कम बुद्धि या मन्द बुद्धि का है। प्रश्न यह उठता है कि वास्तव मे बुद्धि क्या है तथा उसका क्या स्वरूप है? यहाँ पर हम बुद्धि के संबंध मे विभिन्न मनोवैज्ञानिक द्वारा दी गयी परिभाषाओ का अध्ययन करेंगे जिनके आधार पर बुद्धि का अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है।

(1) स्टर्न के अनुसार " जीवन की नवीन अवस्थाओं एवं समस्याओं के अनुसार समायोजन करने की शक्ति बुद्धि है।

(2) वर्ट के शब्दों मे " बुद्धि एक स्वाभाविक प्रकृति दत्त मानसिक योग्यता है।

(3) थर्स्टन के अनुसार " बुद्धि मे शाब्दिक आगमन, तर्क शक्ति, निगमन्तर तर्क शक्ति, स्मरण शक्ति, बाल शक्ति, वस्तु प्रेक्षण शक्ति, संख्या की गणना तथा प्रतिबोधक गति सम्मिलित है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

बुद्धि की विशेषताएँ

बुद्धि की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित है —

- बुद्धि समस्या समाधान की योग्यता है।
- शैक्षिक क्रियाओं द्वारा जन्मजात बुद्धि में वृद्धि संभव है।
- बुद्धि के उचित विकास के लिए पर्यावरण का महत्व है।
- बुद्धि पूर्व अनुभवों एवं पूर्व अर्जित ज्ञान से लाभ उठाने की योग्यता है।
- बुद्धि सीखने की योग्यता है।
- बुद्धि पर्यावरण के साथ समायोजन की योग्यता है।
- बुद्धि में व्यक्ति की सूझ भी सम्मिलित होती है जिसके द्वारा वह सभी समस्याओं का समाधान करती है।
- बुद्धि में वह योग्यता भी सम्मिलित है जिसकी सहायता से व्यक्ति विवेकशील और अमूर्त चिन्तन करता है।
- बुद्धि की योग्यता में शाब्दिक और आंकिक योग्यता, स्मृति योग्यता, तार्किक योग्यता और निर्णय या निश्चित करने के अतिरिक्त बुद्धि में प्रत्यक्षपरक योग्यता भी सम्मिलित है।
- बुद्धि अनेक योग्यताओं का समुच्चय है।
- बुद्धि सम्बन्धित विचारों की खोज करती है।
- बुद्धि व्यक्ति की वह समग्र एवं सार्वभौमिक शक्ति है जो उसे ध्येययुक्त कार्य करने, तर्कपूर्ण चिन्तन करने एवं वातावरण के साथ प्रभावशील अभियोजन करने में सहायता करती है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

बुद्धि के प्रकार

(1) ई. एल. थार्नडाइक ने बुद्धि के तीन प्रकार बतलाये हैं —

(i) सामाजिक बुद्धि
(ii) अमूर्त बुद्धि
(iii) मूर्त बुद्धि

इनके अतिरिक्त एक अन्य प्रकार की भी बुद्धि होती है जिसे गामक बुद्धि कहा गया है —

(iv) गामक या यान्त्रिक बुद्धि

(i) **सामाजिक बुद्धि :-** सामाजिक बुद्धि से तात्पर्य उसी प्रकार की सामान्य मानसिक क्षमता से होता है, जिसके सहारे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को ठीक ढंग से समझता है तथा व्यवहार कुशलता भी दिखाता है। ऐसे लोगों के सामाजिक संबंध काफी अच्छे होते हैं। तथा समाज मे इनकी प्रतिष्ठा भी अधिक होती है। इनमे सामाजिक कौशलता उच्च स्तर की होती है। जिन व्यक्तियों मे सामाजिक बुद्धि होती है, उनमे अन्य लोगों के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से व्यवहार करने की क्षमता, अच्छा आचरण करने की क्षमता एवं समाज के अन्य लोगों से मिल-जुलकर सामाजिक कार्यों मे हाथ बटाने की क्षमता अधिक होती है। ऐसी बुद्धि व्यक्ति को जीवन मे व्यावहारिक सफलता दिलाने मे काफी सहायक होती है। इसके अभाव

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

मे व्यक्ति मे समाज मे प्रभावपूर्ण ढंग से व्यवहार नही कर सकता। स्पष्ट है कि सामाजिक बुद्धि एक ऐसी बुद्धि है जो व्यक्ति को सामाजिक परिस्थितियों मे समायोजित होने मे मदद करती है। इसी अर्थ मे ड्रेवर एवं वालरस्टीन ने सामाजिक बुद्धि को परिभाषित करते हुए कहा है, "सामाजिक बुद्धि, बुद्धि का एक प्रकार है जो किसी व्यक्ति मे अन्य व्यक्तियों एवं सामाजिक सम्बन्धों के प्रति व्यवहार मे निहित होता है।"

संक्षेप मे, अपने समाज के अनुकूल व्यवहारित करने की योग्यता ही 'सामाजिक बुद्धि' है। यह दूसरे लोगो के साथ प्रभावपूर्ण व्यवहार करने की क्षमता है। दूसरो के साथ सदाचारण करने, उनसे मिल-जुलकर रहने, उनके साथ विकास के कार्यों मे भाग लेने और सामाजिक कार्यों मे रुचि लेने की योग्यता ही 'सामाजिक बुद्धि' है। जीवन मे सफलता प्राप्त करने के लिए सामाजिक बुद्धि नितान्त आवश्यक होती है।

(ii) अमूर्त बुद्धि :- अमूर्त विषयों के बारे मे चिन्तन करने की क्षमता को ही अमूर्त बुद्धि कहा जाता है। ऐसी बुद्धि मे व्यक्ति शब्द, प्रतीक तथा अन्य अमूर्त चीजों के सहारे अच्छे से चिंतन कर लेता है। इस ढंग की क्षमता दर्शनिकों, कलाकारों, कहानीकारों आदि मे अधिक होती है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

ऐसे लोग प्राय: अपने विचारों, कल्पनाओं एवं मानसिक प्रतिमाओं के सहारे बड़ी-बड़ी समस्याओं का समाधान कर लेते है। जिन छात्रों मे अमूर्त बुद्धि अधिक होती है, उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ अधिक श्रेष्ठ होती है। जिन व्यक्तियों मे अमूर्त बुद्धि का महत्त्व छात्रों के लिए अन्य दूसरी प्रकार की बुद्धि से अधिक होता है।

संक्षेप मे पुस्तकीय ज्ञान के प्रति अपने को व्यवस्थित करने की योग्यता 'अमूर्त बुद्धि' कहलाती है।

(iii) मूर्त बुद्धि :- मूर्त बुद्धि से तात्पर्य इस प्रकार की मानसिक क्षमता से होता है जिसके सहारे व्यक्ति मूर्त या ठोस वस्तुओं के महत्त्व को समझता है, उनके बारे मे सोचता है तथा अपनी इच्छा एवं आवश्यकतानुसार उनमे परिवर्तन लाकर, उन्हे उपयोगी बनाता है। इसे व्यावहारिक बुद्धि भी कहा जाता है। जिन बालकों मे मूर्त बुद्धि अधिक होती है, उनमे हस्तकलाओं की क्षमता अधिक होती है तथा वे आगे चलकर एक सफल इंजीनियर या कुशल कारीगर बनने मे सफलता प्राप्त करते है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

इनके अतिरिक्त एक अन्य प्रकार की भी बुद्धि होती है जिसे गामक बुद्धि कहा गया है —

(v) गामक या यान्त्रिक बुद्धि :- गामक बुद्धि यन्त्रों तथा मशीनों के साथ अनुकूलन की योग्यता है। इनके होने से व्यक्ति एक कुशल कारीगर, मिस्त्री, चालक या दक्ष इंजीनियर हो सकता है। यह ऐसी शक्ति है, जिसके द्वारा व्यक्ति उन परिस्थितियों में जिनका सम्बन्ध यन्त्रों या भौतिक पदार्थों से होता है अपने को सुव्यवस्थित कर लेता है। एक बालक, जिसमें अपनी साईकिल ठीक करने, घण्टी को स्वयं बना लेने, यान्त्रिक औजारों के ठीक-ठीक प्रयोग करने की क्षमता है, तो उस बालक के बारे में यह कहा जाएगा कि उसमें यान्त्रिक बुद्धि है। विभिन्न व्यक्तियों में उनकी गामक बुद्धि में भी अन्तर पाया जाता है। कोई व्यक्ति छोटे से और स्थूल यन्त्र को भी ठीक नहीं कर सकता, थोड़ी-सी साइकिल बिगड़ गई — उन्हें पता नहीं, क्या खराबी है, साइकिल वाले की दुकान के लिए चले जा रहे हैं। दूसरा व्यक्ति है, अपने घर की बिजली की व्यवस्था स्वयं ठीक कर लेता है, साइकिल, घड़ी, मोटर भी ठीक कर लेता है। यद्यपि यह क्षमता अभ्यास

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

के द्वारा बढ़ाई जा सकती है; किन्तु बहुत से लोग लम्बे अभ्यास के उपरान्त भी कुशल कारीगर, मिस्त्री एवं इंजीनियर नहीं बन पाते, जबकि दूसरे व्यक्ति थोड़े ही अभ्यास से उन कामों मे दक्ष हो जाते है। जिन व्यक्तियों मे गामक बुद्धि का विकास कम होता है, वे खेलो और अन्य शारीरिक कार्यों मे भी कुशलता पूर्वक भाग नही ले सकते तथा हीन और दब्बू प्रकृति के होते है। गामक बुद्धि एक प्रकार से मूर्त बुद्धि का ही एक स्वरूप है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

प्र० मनोविज्ञान से आप क्या समझते हैं? शिक्षा तथा मनोविज्ञान के सम्बन्ध को स्पष्ट कीजिये। मनोविज्ञान के शिक्षा पर प्रभाव की संक्षिप्त विवेचना कीजिये।

उ० - मनोविज्ञान का अर्थ

मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विवेचन करने से ज्ञात होता है कि यह एक विकासशील विज्ञान रहा है। समय-समय पर मनोविज्ञान का क्षेत्र परिवर्तित होता रहा है। क्षेत्र परिवर्तन के परिणामस्वरूप मनोविज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा समय-समय पर बदलती रही है। आधुनिक मनोविज्ञान का क्षेत्र तथा परिभाषा प्रारम्भिक मनोविज्ञान के क्रमशः क्षेत्र एवं परिभाषा से नितांत भिन्न है। मनोविज्ञान अंग्रेजी भाषा के शब्द Psychology का हिन्दी रूपान्तरण है Psychology ग्रीक भाषा के दो शब्दों Psycho अर्थात् 'आत्मा' और Logos अर्थात् अध्ययन से मिलकर बना है अतएव मनोविज्ञान का अर्थ सबसे पहले 'आत्मा का अध्ययन' माना गया है। किन्तु आत्मा की सही परिभाषा के अभाव मे मनोविज्ञान की परिभाषा बदल दी गयी। मनोविज्ञान को आत्मा के स्थान पर मन का अध्ययन करने वाला विषय अर्थात् मन के विज्ञान के रूप मे स्वीकार किया जाने लगा। लेकिन कुछ समय बाद यह धारणा भी गलत सिद्ध हुई। इसके विभिन्न कारण थे। वास्तव मे मन कोई मूर्त

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

वस्तु नहीं है। मन तो केवल मानसिक वृत्तियों तथा प्रक्रियाओं के लिए प्रयोग होने वाला एक अमूर्त प्रत्यय है इसके बाद विभिन्न विचारकों ने मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान के रूप मे प्रतिपादित किया।

शिक्षा व मनोविज्ञान मे सम्बन्ध

मनोविज्ञान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से पता चलता है कि जिस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र मे मनोविज्ञान का प्रयोग जरूरी माना जाने लगा है, उसी प्रकार 20 वी शताब्दी मे मनोविज्ञान के गहन अध्ययन के परिणामस्वरूप शिक्षा की भी नवीन व्याख्या की जाने लगी। मनोविज्ञान ने बताया कि एक बालक की आवश्यकताएँ प्रौढ़ व्यक्ति से किस प्रकार भिन्न है। इसलिए बालक को बालक मानकर ही शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। इस प्रकार मनोविज्ञान के प्रभाव के कारण वर्तमान शिक्षा 'अध्यापक' अथवा 'ज्ञान प्रधान' न होकर 'बाल प्रधान' हो गयी है। आज बालक की आयु, रुचि, योग्यता एवं बौद्धिक क्षमता को ध्यान मे रखकर ही शिक्षा प्रदान की जाती है।

शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के व्यवहारो मे परिवर्तन आता है तथा मनोविज्ञान का भी संबंध व्यक्ति के व्यवहार से होता है, इसलिए मनोविज्ञान व शिक्षा दोनो ही मानव - व्यवहार से जुडे है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

अनेक शिक्षा - शास्त्रियो ने इस बात पर बल दिया है कि शिक्षा का मुख्य आधार मनोविज्ञान होना चाहिए। यही मुख्य (शिक्षा - शास्त्रियो के मतो का वर्णन है।

स्किनर के शब्दो मे " शिक्षा का प्रमुख आधारभूत विज्ञान, मनोविज्ञान है।

हरबर्ट के शब्दो मे " शिक्षा सिद्धान्तो का आधार मनोविज्ञान होना चाहिए।"

ड्रेवर के शब्दो मे " मनोविज्ञान एक महत्वपूर्ण तत्व है। बिना मनोविज्ञान की मदद से हम शिक्षा की समस्याओ को हल नही कर सकते है।"

मॉण्टेसरी के शब्दो मे " अध्यापक जितना अधिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का ज्ञान रखता है, उतना अधिक वह जानता है कि कैसे पढ़ाया जाए।"

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा का कोई भी तत्व ऐसा नही है जो मनोविज्ञान के प्रभाव से वंचित रहा हो तथा जिसे स्पष्ट करने मे मनोविज्ञान ने कोई विशेष योगदान न दिया हो।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

मनोविज्ञान का शिक्षा पर प्रभाव

शिक्षा का उद्देश्य मानव की क्षमताओं व योग्यता का विकास करना है। मनोविज्ञान का लक्ष्य मानव के व्यवहारों का अध्ययन करना है। मानव की योग्यताओं का विकास तब तक नहीं किया जा सकता जब तक कि उसके व्यवहारों का पूरी तरह से ज्ञान प्राप्त न कर लिया जाये। वास्तव में मनोविज्ञान ही शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता पहुँचाता है। मनोविज्ञान ने शिक्षा के सिद्धान्त तथा प्रयोग में क्रान्तिकारी परिवर्तन किया है। मनोविज्ञान हमे यह दर्शाता है कि बालक की शिक्षा कब, कैसे तथा किस अवस्था मे प्रारम्भ की जानी चाहिए। शिक्षा का स्वरूप, सीखने की सर्वश्रेष्ठ विधि व चरित्र का सर्वोत्तम विकास आदि बातों का ज्ञान मनोविज्ञान ही हमें देता है।

शिक्षा के क्षेत्रों मे मनोविज्ञान ने बहुत ही महत्वपूर्ण परिवर्तन किये है, जिनका विवरण निम्न प्रकार है —

1) बाल केन्द्रित शिक्षा :— प्राचीन काल मे शिक्षा का केन्द्र अध्यापक था। बालक का स्थान गौण था। आज शिक्षा बाल

केन्द्रित है। प्रत्येक बालक की ओर अलग से ध्यान दिया जाता है।

2) **शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति मे सहायक :-** शिक्षा के उद्देश्यों को मनोविज्ञान की सहायता से ही प्राप्त किया जा सकता है। मनोविज्ञान के द्वारा शिक्षक को बालक के विचारों, मनोवृत्तियों व मनोभावों का पता चलता है, साथ ही वह बालकों मे इच्छित परिवर्तन लाता है। स्किनर के अनुसार, "शिक्षा मनोविज्ञान आजकल शिक्षक के जीवन को ज्ञान से समृद्ध कर व उसकी शिक्षण विधि को उन्नत बनाकर उसे उद्देश्यों की प्राप्ति मे सहायता पहुँचाता है।"

3) **व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर बल :-** बालक मे व्यक्तिगत विभिन्नताये होती है। व्यावहारिक मनोविज्ञान के विकास से यह स्पष्ट है कि भिन्न - भिन्न व्यक्तियों मे रुचि, बुद्धि, सामर्थ्य तथा योग्यताओं मे अन्तर होता है। सब बालकों को एक ही डण्डे से नही हांका जा सकता है। अतः आधुनिक विद्यालयों ने पिछड़े हुए मन्द, अपराधी, प्रतिभाशाली आदि बालकों की शिक्षा व्यवस्था मे महत्वपूर्ण परिवर्तन व सुधार किये है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

4) शिक्षण विधियों मे सुधार :- सीखना एक जटिल क्रिया है। आज शिक्षक को सीखने की पूर्ण प्रक्रिया पर ध्यान देना होता है। मनोवैज्ञानिक - शिक्षण मे बालको की क्षमताओ, रुचि, रूझान तथा योग्यताओ का पूरा - पूरा ध्यान रखा जाता है। शिक्षक को अपने विशद् ज्ञान के आधार पर नही, बल्कि बालक के मानसिक स्तर व उसकी जरुरतो के अनुसार पढ़ाना चाहिये। मनोविज्ञान मे सीखने की प्रक्रिया के बारे मे अनुसन्धान के द्वारा अनेक ऐसे नियम ज्ञात हुए है जिनसे कम से कम समय मे अधिक से अधिक अच्छा शिक्षण हो सकता है। इस बारे मे थार्नडाइक के नियम बहुत ही महत्वपूर्ण है।

UNITED SECULAR SOCIETY

5) पाठ्यक्रम मे सुधार :- मनोविज्ञान के फलस्वरूप पाठ्यक्रम मे बहुत से सुधार हुए है। आजकल बालक को अपनी रुचि के अनुसार विषय चुनने का अवसर प्रदान किया जाता है। बालक की वास्तविक आयु पर ध्यान न देकर उसकी मानसिक आयु के आधार पर भी सीखने का स्तर निर्धारित किया जाता है। पिछडे, मन्द बुद्धि तथा प्रतिभाशाली बालको के लिए विशेष पाठ्यक्रम बनाये जाते है। शिक्षा को मनोरंजक बनाने के लिए दृश्य - श्रव्य सामग्री का प्रदर्शन, रेडियो द्वारा शिक्षा, टेलीविजन, चलचित्रो

Scanned with CamScanner

तथा पर्यटनो द्वारा पाठ्यक्रम की दुरुहता कम हो गई है और बालक आसानी से सीख जाता है।

6) अनुशासन मे सुधार :- विद्यालय मे अनुशासन के लिए मनोविज्ञान ने शिक्षक की बहुत सहायता की। आजकल विद्यालय मे अनुशासन लादने की बजाय यह प्रयत्न किया जाता है कि विद्यार्थी खुद ही अनुशासित बने।

7) पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं पर बल :- वर्तमान शिक्षा का लक्ष्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है। आजकल बच्चे को पुस्तकीय ज्ञान देना ही पर्याप्त नही समझा जाता है। मनोवैज्ञानिकों के सुझाव मे पाठ्यक्रम के अलावा अन्य सहगामी क्रियाओं पर बल दिया जाता है। खेलकूद, संगीत, कला, नाटक, भ्रमण व सामूहिक उत्सव आदि की व्यवस्था विद्यालयो मे की जाती है।

8) मापन व मूल्यांकन मे सहायक :- मनोविज्ञान की सहायता तथा मूल्यांकन की नवीन विधियो का प्रयोग शिक्षा मे किया जाने लगा है। इन विधियो के द्वारा यह प्रयास किया जाता है कि बालक की

UNITED SCHOLARS SOCIETY

Scanned with CamScanner

बालक की योग्यताओं का मापन व प्रगति का मूल्यांकन सही-नही है। अध्यापक समय - समय पर छात्रों की योग्यता का मूल्यांकन करता रहता है। मापन व मूल्यांकन की नवीन विधियों ने अपव्यय व अवरोधन की समस्या को भी काफी हल कर दिया है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

भारत मे शिक्षा

प्र. वैदिककालीन शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य और आदर्श क्या थे? वे हमारे देश की वर्तमान शिक्षा के लिए कहाँ तक उपयोगी सिद्ध हो सकते है?

उ.

वैदिक कालीन शिक्षा के उद्देश्यो एवं आदर्शो के संदर्भ मे डा० ए० एस० अल्तेकर ने लिखा है कि - " ईश्वर भक्ति एवं धार्मिकता का समावेश, चारित्रिक निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, नागरिकता एवं सामाजिक कर्तव्यपालन की भावना का समावेश, सामाजिक कुशलता की उन्नति एवं राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं प्रसार आदि प्राचीन भारत की शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य व आदर्श कहे जा सकते है। "

UNITED SECULAR SOCIETY

वैदिककालीन शिक्षा के उद्देश्य एवं आदर्श

वैदिककालीन भारतीय शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित थे -

1) संस्कारो का विकास करना - वैदिककालीन युग मे शिक्षा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रो मे अच्छे संस्कारो का विकास करना था। शिक्षा के द्वारा वैदिक आदर्शो के अनुरूप संस्कारो को छात्रो मे विकसित किया जाता था। ब्रह्मचर्य, सदाचार, परमार्थ, जनहित भावना, परोपकार, सामाजिक भावना,

गुरु व बड़ो का आदर, कर्तव्य पालन, सत्य व्रत, धर्म के प्रति निष्ठा, श्रम के प्रति आदर, उच्च विचार आदि संस्कारों को विकसित करके छात्रों को संस्कार युक्त बनाया जाता था।

ii) ज्ञान एवं अनुभव का समन्वय :- वैदिक कालीन शिक्षा पद्धति के अन्तर्गत ज्ञान एवं अनुभव का समन्वय करके शिक्षा प्रदान की जाती थी, जिसके फलस्वरूप शिक्षार्थी ज्ञान को आत्मसात् करने मे सफल हो जाते थे। इस शिक्षा पद्धति मे चिंतन, मनन, स्वाध्याय इत्यादि के द्वारा शिक्षार्थियों को पूर्णरूपेण योग्य एवं कुशल बनाने का प्रयास गुरुजनो द्वारा किया जाता था। इस उद्देश्य के सन्दर्भ मे डॉ० आर० के० मुकर्जी ने लिखा है कि — "शिक्षा का उद्देश्य पढ़ना नही था, बल्कि ज्ञान एवं अनुभव को आत्मसात् करना था।"

iii) आत्मा की पवित्रता का विकास करना :- वैदिक युग मे शिक्षा का दूसरा प्रमुख उद्देश्य मानव का आत्मिक विकास करना था। उस काल मे मानव-जीवन को अत्यधिक सरल, स्वाभाविक तथा पवित्र बनाने का प्रयास किया जाता था। जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति था। मनुष्य की ईश्वर मे पूर्ण आस्था थी

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

तथा धर्म के द्वारा सत्य तक पहुँचकर मोक्ष प्राप्त करने का प्रयास किया जाता था।

iv) **चित्तवृत्तियों का निरोध** :- वैदिक कालीन शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण गुण, छात्रों की चित्तवृत्तियों का निरोध करना था। प्राचीन भारतीय शिक्षाविद् जीवन को सफल बनाने हेतु आत्मज्ञान एवं आत्मसंयम का समान महत्व मानते थे। इसी कारणवश वैदिक काल मे शिक्षार्थियों को न केवल मौखिक रूप से ज्ञान कराया जाता था, अपितु सत्य के मार्ग पर चलने के लिए उन्हें आत्मसंयम की दिशा मे प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता था। इसी उद्देश्य से शिक्षार्थियों को भिन्न-भिन्न प्रकार की कठोर परीक्षाओं मे अपने को खरा सिद्ध करना आवश्यक था। शिक्षार्थियों को दिनचर्या का कठोरता से पालन करना पड़ता था। डा. आर के. मुखर्जी के अनुसार "मन के उन कार्यों का निषेध था, जिनके कारण वह भौतिक जगत मे उलझ जाता था।"

v) **चरित्र का निर्माण** :- वैदिक काल मे शिक्षार्थियों के चरित्र निर्माण तथा विकास पर विशेष ध्यान दिया जाता था। इसी को ही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य समझा जाता था। वैदिक काल मे ज्ञान सम्पन्न परन्तु चरित्रहीन व्यक्ति को अत्यन्त निम्न दृष्टि से देखा जाता था। शिक्षार्थियों के चारित्रिक

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

निर्माण हेतु उनमें आरंभ से ही विभिन्न नैतिक प्रवृत्तियों का विकास करना नितांत आवश्यक माना जाता था।

(vi) भारतीय संस्कृति का संरक्षण तथा प्रसार :-

हमेशा से शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्ण रखना रहा है। वैदिक काल की शिक्षा व्यवस्था भी इसका अपवाद नहीं थी। शिक्षा के द्वारा राष्ट्रीय एवं सामाजिक संस्कृति का संरक्षण तथा प्रसार करना, वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था का एक आवश्यक अंग था। शिक्षार्थियों को संस्कृति का ज्ञान प्रदान करके सांस्कृतिक विरासत को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित किया जाता था। इसके साथ सांस्कृतिक गौरव को एक स्थान से अन्य स्थानों तक फैलाने व प्रचारित करने का महत्वपूर्ण कार्य भी शिक्षालयों से निकलने वाले शिक्षार्थी ही किया करते थे।

(vii) स्वास्थ्य संरक्षण एवं वृद्धि :- वैदिककालीन ऋषि और गुरुओं की यह मान्यता थी कि मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है। इस उद्देश्य अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति के लिए पहली आवश्यकता स्वस्थ्य

Scanned with CamScanner

शरीर और निर्मल मन की है। यही कारण है कि यद्यपि आश्रमों और गुरुकुलों में शिष्यों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के संरक्षण और संवर्धन पर विशेष बल दिया जाता था।

viii) सामाजिक कुशलता की उन्नति :- वैदिक काल में शिक्षार्थियों को सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार का ज्ञान साथ - साथ प्रदान किया जाता था, जिससे कि शिक्षार्थी शुद्ध आचार - विचार एवं व्यवहार के माध्यम से अपने जीवन को सफल बना सके। व्यावहारिक कुशलता के माध्यम से ही शिक्षार्थी समाज में अपना अस्तित्व सुरक्षित रख पाते थे या समाज में सामंजस्य स्थापित कर पाते थे। शिक्षार्थी भिन्न - भिन्न प्रकार के व्यवसायों के माध्यम से समाज की उन्नति करते थे। डॉ. आर. के. मुखर्जी के अनुसार - "शिक्षा पूर्णतया सैद्धान्तिक और साहित्यिक नहीं थी बल्कि किसी न किसी शिल्प से सम्बन्धित थी।

ix) व्यावसायिक कुशलता का विकास :- शैक्षिक ज्ञान के साथ शिक्षार्थियों को व्यावसायिक योग्यता प्रदान करना, प्राचीन भारतीय शिक्षा का अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य था। भिन्न - भिन्न वर्णों को भिन्न - भिन्न व्यवसायों

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

की शिक्षा प्रदान की जाती थी, जैसे:
ब्राह्मणो को अध्ययन - अध्यापन की क्षत्रियों
को सैनिक एवं राजकार्य की शिक्षा।

x) ईश्वर की भक्ति एवं धार्मिकता का समावेश।-

वैदिक काल की शिक्षा का (परा विद्या या विमुक्ति)
की उन्नति को सार्थकता प्रदान करने वाली थी।
प्राचीन काल मे लोगो की धारणा थी कि
शिक्षा के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति होती है। वही
शिक्षा सार्थक है। जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो सके।
मोक्ष की प्राप्ति ईश्वर की भक्ति के द्वारा ही
हो सकती है। प्राचीन युग मे शिक्षार्थियों मे
आध्यात्मिकता का विकास करने के लिए दैनिक
जीवन मे यज्ञ, व्रत उपवास, सन्ध्या, प्रार्थना आदि
का प्रावधान था।

xi) सामाजिक कर्तव्यों का पालन करना।- वैदिक काल
की शिक्षा
का एक उद्देश्य शिक्षार्थियों को सामाजिक कर्तव्यों
का पालन करना सिखाना था। इस युग मे
शिक्षार्थी विद्या अध्ययन के साथ - साथ समाज
के अन्य व्यक्तियों की सहायता कर, अपने
सामाजिक कर्तव्यों का निर्वाह करते थे जैसे—
दीन दुखियों की सहायता करना,

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

नि:शुल्क शिक्षा प्रदान करना आदि।

xii) जीविकोपार्जन के लिए तैयार करना :- शिक्षार्थियों को जीविका के लिए तैयार करना भी हमेशा से शिक्षा संस्थाओं का महत्वपूर्ण कार्य माना जाता रहा है। वैदिक काल मे भी शिक्षार्थियों को इस प्रकार का व्यवहारिक ज्ञान प्रदान किया जाता था कि वे अपने जीविकोपार्जन के लिये समर्थ हो सकें। जीवनोपयोगी उद्यम जैसे - कृषि, डेरी फार्म, चिकित्सा, युद्ध, कला, व्यवसाय, पशुपालन आदि का प्रशिक्षण दिया जाता था। इस प्रकार के प्रशिक्षण से शिक्षार्थियों की सामाजिक कुशलता मे वृद्धि होती थी तथा वे गृहस्थ आश्रम के दौरान अपने परिवारजनों का भरण - पोषण करने मे सक्षम सिद्ध होते थे।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

माध्यमिक शिक्षा

प्र० माध्यमिक शिक्षा के प्रसार से आप क्या समझते है? माध्यमिक शिक्षा के प्रसार की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए। तथा माध्यमिक शिक्षा के उपायों का वर्णन कीजिए।

उ० -

भारत मे माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप :-

माध्यमिक शब्द का अर्थ है - मध्य की। माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य की शिक्षा है अंग्रेजी मे इसके लिए सेकेण्डरी शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ है - दूसरे स्तर की, पहले स्तर की प्राथमिक और उसके बाद दूसरे स्तर की यह सेकेण्डरी शिक्षा। आज किसी भी देश मे माध्यमिक शिक्षा प्राथमिक और उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी होती है, अपने मे पूर्ण इकाई होती है और बच्चो के निर्माण की शिक्षा होती है। परन्तु यह शिक्षा बच्चो की किस आयु से किस आयु तक अर्थात् किस कक्षा से किस कक्षा तक चले और इसकी क्या पाठ्यचर्या हो, इस विषय मे भिन्न - भिन्न देशो के भिन्न - भिन्न निर्णय है।

हमारे देश में प्राचीन और मध्यकाल में शिक्षा केवल दो स्तरों में विभाजित रही - प्राथमिक और उच्च। इस देश में माध्यमिक शिक्षा का श्रीगणेश आधुनिक युग में ईसाई मिशनरियों ने किया। सर्वप्रथम तो उन्होंने यहाँ प्राथमिक विद्यालय खोले, उसके बाद उन्होंने प्राथमिक शिक्षा उत्तीर्ण बच्चों के लिए अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों की स्थापना की। परन्तु यह माध्यमिक शिक्षा आज की माध्यमिक शिक्षा से भिन्न थी। भारत में आधुनिक माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप निश्चित करने में सबसे बड़ी भूमिका वुड के घोषणापत्र 1854 की रही। उसमें माध्यमिक शिक्षा के उद्देश्य और पाठ्यक्रम निश्चित किए गए। 1882 में ब्रिटेन सरकार ने भारतीय शिक्षा आयोग का गठन किया। इस आयोग ने माध्यमिक शिक्षा को दो वर्गों में विभाजित करने का सुझाव दिया -

(अ) साहित्यिक और

(ब) व्यावसायिक। परन्तु उस समय देश की परिस्थितियाँ कुछ ऐसी थी कि अंग्रेजों के शासन काल में माध्यमिक शिक्षा का स्वरूप साहित्यिक ही रहा।

15 अगस्त, 1947 को हमारा देश स्वतंत्र हुआ। 1952 में केन्द्रीय सरकार ने माध्यमिक शिक्षा आयोग का गठन किया। इस आयोग ने

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

माध्यमिक स्तर पर विविध पाठ्यक्रम चलाने का सुझाव दिया। इसके बाद कोठारी आयोग 1964-66 ने माध्यमिक स्तर पर अनेक पाठ्यक्रम चलाने की सिफारिश की। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 में पूरे देश के लिए 10+2+3 शिक्षा संरचना की घोषणा की गई, परन्तु तब इसे लागू नहीं किया जा सका। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में इस संरचना को लागू करने पर बल दिया गया। आज हमारे देश में प्रथम 8 वर्षीय शिक्षा (कक्षा 1 से कक्षा 8 तक) प्राथमिक के अन्तर्गत बताती है।

माध्यमिक शिक्षा के प्रसार की आवश्यकता

जब हमारा देश स्वतंत्र हुआ उस समय माध्यमिक स्कूलों की संख्या लगभग 1200 थी और उनमें पढ़ने वालों की संख्या लगभग 27 लाख थी। 1951 के बाद हमने शिक्षा के प्रसार और उन्नयन के लिए योजनाबद्ध कार्य शुरू किए जिनके परिणामस्वरूप माध्यमिक विद्यालयों एवं उनमें पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं की संख्या में निरन्तर वृद्धि हुई। वर्तमान 2018 में माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या लगभग 435000 और इनमें नामांकित

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

छात्र - छात्राओं की संख्या लगभग 8 करोड़ होगी। इसका अर्थ है कि स्वतंत्र भारत में माध्यमिक शिक्षा का प्रसार बहुत तेजी से हुआ, परन्तु चौंकाने वाला तथ्य यह है कि वर्तमान (2020-21) में इस आयु वर्ग के लगभग 11 करोड़ बच्चों में से 5 करोड़ बच्चे माध्यमिक शिक्षा से बाहर है। इन 5 करोड़ बच्चों में से लगभग 2.5 करोड़ बच्चे 15-16 आयु वर्ग के होंगे अर्थात् कक्षा 9 व 10 में पढ़ने योग्य बच्चे होंगे। शिक्षा संरचना 10+2+3 के अनुसार इन 2.5 करोड़ बच्चों की माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था तो अनिवार्य रूप से करनी होगी।

UNITED SECULAR SOCIETY

माध्यमिक शिक्षा के प्रसार में बाधाएँ

संसाधनों की कमी :- भारत सरकार ने 1968 से शिक्षा पर जीडीपी का 6% व्यय करने की घोषणा निरन्तर की है परन्तु अभी भी 4% ही व्यय किया जा रहा है। इसका अर्थ है कि सरकार स्वयं ही शिक्षा के प्रसार एवं उन्नयन के लिए विशेष चिन्तित नहीं है।

उपलब्ध साधनों का सही प्रयोग न होना :- हम देख रहे है कि माध्यमिक शिक्षा के प्रसार एवं उन्नयन

Scanned with CamScanner

के लिए जो भी सामान्य एवं योजना बजट होता है उसमे भी आधे से अधिक धनराशि का बन्दरबाँट हो जाता है।

- **भौगोलिक परिस्थिति** :- हमारे देश का एक बहुत बड़ा क्षेत्र पहाड़ी, रेगिस्तानी और जंगली है इन क्षेत्रों मे लोग बहुत छोटी - छोटी बस्तियो मे बसे है। पहली बात तो यह है कि यदि 5 Km (किमी) की दूरी के दायरे मे माध्यमिक स्कूल स्थापित कर भी है तो इन स्कूलो मे प्रवेश लेने वालो की संख्या बहुत कम होती है और यदि होती भी है तो आवागमन की कठिनाइयो के कारण बच्चे प्रवेश नही ले पाते।

- **तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या** :- 1951 मे हमारे देश की कुल जनसंख्या 36.31 करोड थी जो 2011 मे बढ़कर 121.04 करोड हो गई और वर्तमान मे 2020 मे लगभग 135 करोड से अधिक है। हमारे देश मे प्रतिवर्ष लगभग 1.5 करोड से बढ़ती जनसंख्या हमारे देश की सब समस्याओ का मूल कारण है। स्थिति यह है कि आज किसी भी क्षेत्र मे जितने माध्यमिक स्कूल खोले जाते है, कल उतने ही अधिक स्कूलो की माँग बढ़ जाती है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

माध्यमिक शिक्षा के प्रसार के उपाय

- शिक्षा बजट मे बढ़ोत्तरी — केन्द्रीय सरकार अपने वायदे के अनुसार अपने बजट मे शिक्षा के लिए 6% का प्रावधान तो तत्काल करें आगे आने वाले समय मे इसे बढ़ाकर 10% करे। हमारी दृष्टी से केन्द्रिय सरकार को अपने कुल शिक्षा बजट का 50% प्राथमिक शिक्षा पर, 25% माध्यमिक शिक्षा पर और 25% उच्च शिक्षा पर व्यय करना चाहिए।

- आवंटित धनराशि का सही प्रयोग — केवल शिक्षा बजट बढ़ाने से ही माध्यमिक शिक्षा का विस्तार नही किया जा सकता, इसके लिए यह भी आवश्यक है कि माध्यमिक शिक्षा के लिए आवंटित धनराशि का सही प्रयोग हो, पैसे का बन्दरबांट न हो।

- जन सहयोग को बढ़ावा — यू तो सरकार ने माध्यमिक स्तर के निजीकरण की ओर कदम बढ़ा दिया है परन्तु इससे माध्यमिक शिक्षा बहुत मंहगी हो गई है। सरकार को चाहिए कि जो संस्थाएं सेवा भाव से माध्यमिक स्कूल स्थापित करें उन्हे छात्र छात्राओं की संख्या के अनुपात मे आर्थिक सहायता प्रदान करें। और साथ ही यह भी

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

देखे कि उस अनुदान का सही प्रयोग हो।

- दूर दराज के क्षेत्रों मे केन्द्रिय स्थानो पर आवासीय माध्यमिक स्कूलो की स्थापना —

हम जानते है कि दूर दराज की छोटी - छोटी बस्तियो मे माध्यमिक स्कूलो के लिए पूरे बच्चे नही मिलते, तब इन बस्तियो के केन्द्रिय स्थान पर आवासीय माध्यमिक स्कूल खोले जाएं और इन स्कूलो मे शिक्षा पूर्ण रूप से निःशुल्क हो।

- जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण :- देश की तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या पर नियन्त्रण तो देश की सौ समस्याओ का एक समाधान है। इस क्षेत्र मे सरकार जो जनसंख्या जागृति अभियान और परिवार नियोजन कार्यक्रम चला रही है वे समाज के उच्च वर्ग मे तो कारगर हो रहे है परन्तु निम्न वर्ग मे कारगर नही हो रहे। अब समय आ गया है कि सरकार परिवार नियोजन संबन्धी कानून बनाए और इसे देश की सम्पूर्ण जनता पर कड़ाई से लागू करें।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

शिक्षक, शिक्षण एवं तकनीकी

प्र. शिक्षा तकनीकी का अर्थ स्पष्ट कीजिये तथा परिभाषित कीजिये। आधुनिक शैक्षिक अभ्यास मे इसके महत्त्व एवं आवश्यकता की व्याख्या कीजिए।

उ. -

शैक्षिक तकनीकी का अर्थ :- शैक्षिक तकनीकी कोई शिक्षण - पद्धति नही है। यह एक ऐसा विज्ञान है, जिसके आधार पर शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्यो को अधिकतम प्राप्ति के लिये विभिन्न व्यूह रचनाओ का विकास किया जा सकता है। जब शिक्षण के उद्देश्य निर्धारित हो जाते है तो उनकी प्राप्त करने के लिए शैक्षिक तकनीकी अस्तित्व मे आती है।

शैक्षिक तकनीकी की परिभाषाएँ :-

अनविन के शब्दो मे :- " शैक्षिक तकनीकी का सम्बन्ध शिक्षा और प्रशिक्षण की आवश्यकताओ के लिये आधुनिक कौशलो और तकनीकी के प्रयोग से है। इसमे संचार व्यवस्था, सभी तरीको और वातावरण के नियन्त्रण जो सीखने को प्रभावित करते है, द्वारा सीखने को प्रोत्साहन देना सम्मिलित है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

रॉबर्ट ए. कॉक्स के अनुसार " मनुष्य की सीखने की दशाओं मे वैज्ञानिक प्रक्रिया का प्रयोग शैक्षिक तकनीकी कहलाता है।

जॉन. पी. डेसिको के अनुसार " शैक्षिक तकनीकी प्रयोगात्मक व व्यावहारिक शिक्षण समस्याओं को समझने तथा उनका समाधान करने के लिये सीखने मे मनोविज्ञान का विस्तृत प्रयोग है।

शैक्षिक तकनीकी की आवश्यकता

- शिक्षक के लिये आवश्यकता — शैक्षिक तकनीकी पर अधिकार रखने वाला शिक्षक अपने छात्रों के व्यवहारों का अध्ययन कर सकता है, समझ सकता है और उनमे वांछित सुधार लाने के प्रयत्न कर सकता है। शिक्षक को विषय - वस्तु के साथ-साथ व्यवहार अध्ययन और व्यवहार सुधार की प्रणालियों का ज्ञान भी होना चाहिए।

- सीखने के क्षेत्र मे आवश्यकता — शैक्षिक तकनीकी हमें सीखने की प्रभावपूर्ण विधियों तथा सिद्धान्तों का ज्ञान प्रदान

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

करती है, सीखी हुई विषय वस्तु को स्थायी करने की विभिन्न प्रक्रियाओं का अध्ययन करती है और छात्रों में सीखने के प्रति प्रेरणा जाग्रत करने में तथा उनकी रुचि बनाये रखने में सहायता प्रदान करती है। सीखने के क्षेत्र में छात्रों को उनकी गति के अनुसार ही सीखने के सिद्धान्त का पालन करता है।

- समाज के लिए आवश्यक — गैरीसन के द्वारा शिक्षा मनोविज्ञान के सन्दर्भ में कहे गये शब्द शैक्षिक तकनीकी पर ही लागू होते है।

समाज में आज जनसाधारण के पास जो रेडियो, ट्रांजिस्टर, टेपरिकॉर्डर आदि की सुविधाये है, उनका उपयोग शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में किया जा सकता है। शैक्षिक तकनीकी शिक्षकों और छात्रों तथा जनसाधारण के ज्ञानात्मक, प्रभावात्मक तथा मनोगत्यात्मक पक्षों का उचित विकास करती है। सीमित संसाधन वाले देशों के उचित लिये शैक्षिक तकनीकी ऐसी प्रविधियों का वरदान देती है जिनकी मदद से जन शिक्षा का प्रचार, प्रसार तथा विस्तार होता है। शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से एक

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

प्रभावशाली शिक्षक नेता एवं समाज सुधारक के ज्ञान तथा कौशल का उपयोग टेलीविजन, टेप तथा रेडियो, अभिभाषण आदि के द्वारा समाज के प्रत्येक भाग तक सरलता से पहुँचाया जा सकता है।

अतः कहा जा सकता है कि शैक्षिक तकनीकी आज के तकनीकी युग में शिक्षक की उपादेयता बढ़ाती है, छात्रों व छात्राध्यापकों को प्रभावशाली विधि से सिखाती है और समाज के लिए ज्ञान के संचयन, प्रचार, प्रसार तथा विकास के लिये अत्यन्त उपयोगी है।

शैक्षिक तकनीकी का महत्व

विज्ञान के विकास तथा ज्ञान में वृद्धि ने शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी के प्रवेश को अनिवार्य-सा बना दिया है। विश्व के सभी देश आज शैक्षिक तकनीकी को अपनी शिक्षा-व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण स्थान दे रहे हैं। भारत ने भी इसके महत्व को स्वीकार किया है।

– शैक्षिक तकनीकी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली एवं सक्रिय बनाने में योग देती है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

- शैक्षिक तकनीकी की सहायता से पत्राचार पाठ्यक्रम को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

- शैक्षिक तकनीकी ने अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं मे प्रभावशाली शिक्षक तैयार करने मे काफी महत्वपूर्ण योगदान दिया है इसकी सहायता से अध्यापक प्रशिक्षण की नवीनतम विधियों जैसे - सूक्ष्म - शिक्षण, टी समूह प्रशिक्षण एवं सीमुलेटेड प्रशिक्षण, वीडियो टेप, बन्द परिपथ, दूरदर्शन आदि का प्रयोग करके अध्यापक प्रशिक्षण को प्रभावशाली बनाया जा सकता है

- शैक्षिक तकनीकी अनौपचारिक साधनों की शिक्षा के प्रसार मे अधिकाधिक बल देती है उदाहरण के लिए आज हम रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल फोन, आदि के माध्यम से बहुत दूर बैठे व्यक्तियों को रोचक एवं तथ्यपूर्ण एवं अर्थपूर्ण तथ्यो की जानकारी देकर उन्हें शिक्षित कर सकते है।

हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर तकनीकी की आधुनिक शैक्षिक कार्यकलापों मे भूमिका :-

हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर उपागम दोनो का आपस मे घनिष्ठ

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

सम्बंध है। सॉफ्टवेयर मे अभिक्रमित अध्ययन और हार्डवेयर उपागम मे दृश्य-श्रव्य सामग्री आपस मे सम्बन्धित होती है।

हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर तकनीकी की आधुनिक शैक्षिक कार्य कलापो मे भूमिका

- **स्पष्टता** :- सहायक सामग्री से कई बार कठिन से कठिन सिद्धान्त स्पष्ट हो जाते है। इस कार्य मे माडलो, चित्रो तथा चार्टो का भी बहुत योगदान होता है।
- **ध्यान केन्द्रित करना** :- इस प्रकार की सामग्री छात्रों के मन तथा ध्यान को शिक्षण की ओर केन्द्रित करने का कार्य करती है। जब कक्षा मे छात्रों का ध्यान या मन इधर-उधर भटकने लगता है तो इस तरह की सामग्री का प्रयोग किया जाता है।
- **अभिप्रेरणा** :- छात्रों को अधिगम के लिये यह सहायक सामग्री अभिप्रेरित भी करती है। यदि शिक्षक कोई नया मॉडल कक्षा मे लेकर जाता है तो सभी छात्र उसे देखने के लिए उत्सुक होते है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

- रटने पर अंकुश लगाना :- सहायक सामग्री का प्रयोग पाठ्य - वस्तु को रटने पर रोक लगाता है। छात्र इस सामग्री से प्रत्येक चीज को समझने का प्रयास करेगा। इससे ज्ञान स्थायी भी होता है।

- अनुशासनहीनता पर नियन्त्रण :- कक्षा मे सहायक सामग्री का प्रयोग छात्रो को व्यस्त कर देता है। इससे खाली बैठे छात्रो को अनुशासनहीनता की स्थिति उत्पन्न करने का अवसर ही नही मिलता।

- समय और शक्ति की बचत :- इन सहायक साधनो के प्रयोग से शिक्षको तथा छात्रो का समय और शक्ति दोनो ही नष्ट होने से बच जाती है।

- शब्दावली मे वृद्धि :- रेडियो, कम्प्यूटर, तथा 'टेलीविजन' आदि पर पाठो को सुनकर छात्रो की शब्दावली का विकास होता है।

- वैज्ञानिक मनोवृत्ति का विकास :- कक्षा मे हार्डवेयर के प्रयोग से तथा

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

तकनीकी सिद्धान्तो पर आधारित अन्य सामग्री के विधिवत् प्रयोग से छात्रो मे वैज्ञानिक मनोवृति का विकास होता है।

- शिक्षण मे कुशलता :- सहायक सामग्री के प्रयोग से शिक्षण मे कुशलता आती है और शिक्षको मे भी आत्म विश्वास पैदा होता है पाठ रुचिकर भी बनता है।

- सार्थक अनुभव :- सहायक सामग्री के प्रयोग से छात्रो को सार्थक अनुभव प्रदान किये जाते है। छात्र प्रत्येक सामग्री को समीप से देखकर प्रत्यक्ष अनुभव करता है।

- साधनो की कमी को पूरा करना :- सहायक सामग्री उन क्षेत्रो मे स्कूलो आदि की कमी को भी पूरा करती है और इससे विषय विशेषज्ञो की कमी भी पूरी हो सकती है। जैसे अच्छे शिक्षको के रेडियो पाठो का प्रसारण, विज्ञान के पाठो का दूरदर्शन पर प्रदर्शन आदि।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

अधिगम एवं शिक्षण का प्रबन्धन

प्र० शिक्षण - अधिगम प्रबन्धन / व्यवस्था से आप क्या समझते है? स्पष्ट कीजिये। शिक्षण अधिगम व्यवस्था के विभिन्न सोपानों को समझाइये।

उ० -

शिक्षण की व्यवस्था स्वयं मे एक विशिष्ट प्रकार का कौशल है। अतः शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रारम्भ करने से पहले यह सोचना अति आवश्यक हो जाता है कि शिक्षण की व्यवस्था किस प्रकार की होनी चाहिए। इस प्रकार शिक्षण - व्यवस्था का ज्ञान शिक्षक को प्रशिक्षण काल मे ही देना आवश्यक होता है, क्योंकि प्रशिक्षण के बाद ऐसा ज्ञान अधिक प्रभावशाली तथा लाभकारी नही होता। अतः शिक्षण - अधिगम व्यवस्था का अध्ययन करने से पहले यह जानना आवश्यक है कि 'व्यवस्था' किसे कहते है।

'व्यवस्था' अथवा 'प्रबन्धन' का अर्थ एवं परिभाषाएं

व्यवस्था' का अर्थ - "साधनो एवं स्रोतो को निश्चित उद्देश्यो की प्राप्ति के लिये प्रयोग करने के स्वरूप को व्यवस्था कहते है।"

आई० के० डेवीज के अनुसार "शिक्षण एक उच्चतम व्यवसायिक प्रक्रिया है। आई० के० डेवीज ने ही शिक्षा के क्षेत्र मे इस नये प्रत्यय शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को जन्म दिया।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

स्कॉट के अनुसार, व्यवस्था का अन्तिम उद्देश्य 'विवाद को कम करना' है। व्यवस्था के द्वारा व्यक्ति के महत्व को कम करने का प्रयास किया जाता है। दूसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि व्यवस्था के द्वारा अनिश्चितता को कम किया जाता है और निश्चितता एवं स्थायित्व मे वृद्धि की जाती है।

व्यवस्था के अन्तर्गत अग्रलिखित युक्तियो को प्रयोग मे लाया जाता है :-

1) कार्य विश्लेषण
2) अधिकारो और उत्तरदायित्वो को उत्तम क्रम मे तय किया जाता है।
3) प्रयासो और स्त्रोतो तथा साधनो मे समन्वय स्थापित किया जाता है।

व्यवस्था अग्रलिखित मानव - व्यवहार की धारणाओं पर आधारित है -

1) व्यवस्था का परम्परागत सिद्धान्त - कार्य - केन्द्रित :- व्यवस्था के सदस्यो मे कार्य करने की क्षमता होती है और निर्देशो को स्वीकार करके वे उनका अनुसरण कर सकते है, परन्तु उनमे कार्य करने के लिये पहल करने की क्षमता नही होती। न ही उनमे सम्पूर्ण कार्य प्रणाली को प्रभावित करने की क्षमता होती है। व्यवस्था के सदस्य मानो मशीन की तरह कार्य करते है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

ii) संगठन का मानवीय संबंध सिद्धान्त : सम्बन्ध - केन्द्रित

:- व्यवस्था के सदस्य अपनी अभिवृत्तियों, अभिरुचियों, मूल्यों तथा लक्ष्यों को साथ लाते है। यह सिद्धान्त पारस्परिक कार्य केन्द्रित सिद्धान्त के विपरीत है। इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षण व्यवस्था इस ढंग से की जाती है कि विद्यार्थियों का प्रमुख विकास सम्भव हो। ऐसी व्यवस्था विद्यार्थियों की रुचियों अभिरुचियों तथा योग्यता के अनुसार ही की जाती है। इस प्रकार की व्यवस्था मे अध्यापक केवल परामर्शदाता की भूमिका ही निभाता है।

iii) आधुनिक व्यवस्था का सिद्धान्त : कार्य तथा संबंध - केन्द्रित

:- इस व्यवस्था के सभी सदस्य किसी भी समस्या का समाधान करने मे समर्थ होते है तथा कोई भी निर्णय लेने के योग्य है। इसमे प्रत्यक्षीकरण तथा चिन्तन पर बल दिया जाता है।

उपरोक्त तीनो सिद्धान्तो के लक्ष्यों मे अन्तर होता है। वास्तव मे इन सिद्धान्तो का विकास औद्योगिक प्रबन्ध की दृष्टि से किया गया है। इस सिद्धान्त मे कार्य तथा मानव संबंधो को भी शामिल किया जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार शिक्षक, विद्यार्थी, कार्य तथा व्यवस्था तीनो मे समन्वय स्थापित किया जाता है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

शिक्षण - अधिगम व्यवस्था के चरण / सोपान

शिक्षक को प्रबन्धक भी कहा जाता है सर्वप्रथम आई. के. डेविस ने ही शिक्षक को प्रबंध के रूप मे प्रस्तुत किया।

आई. के. डेविस ने शिक्षण अधिगम व्यवस्था मे निम्नलिखित चार सोपानो का वर्णन किया है —

1) नियोजन
2) व्यवस्था
3) मार्गदर्शन
4) नियन्त्रण

(1) नियोजन — इस सोपान के अन्तर्गत शिक्षण की उद्देश्यो का निर्धारण और उन्हे परिभाषित करना होता है। शिक्षक पाठ्यक्रम का विश्लेषण करके इसे क्रमबद्ध तरीके से नियोजित भी करता है। इसके अतिरिक्त शिक्षक के लिये अनुदेशन का विकास करना तथा सहायक सामग्री का चयन करना भी शिक्षक के उत्तरदायित्वो मे सम्मिलित है। इस सोपान के दौरान शिक्षक को अपनी सृजनात्मक और कल्पना की शक्तियो को विकसित करने का अवसर मिलता है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

(2) व्यवस्था :- शिक्षण अधिगम व्यवस्था मे उद्देश्यो को प्राप्त करना ही मुख्य लक्ष्य होता है। इस सोपान मे उद्देश्यो को हासिल करने के लिये शिक्षण - अधिगम परिस्थितियो को विकसित किया जाता है। इन परिस्थितियो का विकास व्यक्तिगत विभिन्नताओ को ध्यान मे रखकर ही किया जाता है।

(3) शिक्षण का मार्गदर्शन :- एक शिक्षक का मुख्य कर्तव्य होता है - विद्यार्थियो को प्रोत्साहित करना। उनके कार्यो का निरीक्षण करना तथा उन्हे आवश्यक निर्देशन देना। शिक्षक के ये सभी कर्तव्य विद्यार्थियो को उनके उद्देश्यो को सम्मिलित करने मे सहायक होते है।

(4) शिक्षण का नियन्त्रण :- शिक्षक का अंतिम कर्तव्य है शिक्षण का नियन्त्रण। यह कार्य शिक्षक के लिये सबसे कठिन कार्य है। इसमे शिक्षक सभी विद्यार्थियो का उद्देश्यो के सन्दर्भ मे मूल्यांकन करता है। यह मूल्यांकन शिक्षक परीक्षाओ द्वारा करता है।

उपरोक्त चारो सोपान अलग - अलग दिखाई देते है। इन चारो सोपानो की क्रियाये भी भिन्न होती है, लेकिन ये चारो सोपान आपस मे संबंधित होते है। जैसे नियन्त्रण सोपान के अन्तर्गत मार्गदर्शन और व्यवस्था सोपानो का मूल्यांकन किया जाता है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

इससे हमे यह भी पता चलता है कि नियोजन सोपान के अन्तर्गत तय किये गये उद्देश्यो की प्राप्ति हुई है या नही।

शिक्षण - अधिगम व्यवस्था की विशेषताएँ

(1) इस उपागम की सहायता से शिक्षण और अधिगम मे संबंध स्थापित किया जा सकता है।

(2) इस उपागम द्वारा विद्यार्थियो को सर्वांगीण विकास का पूर्ण अवसर प्रदान किया जा सकता है।

(3) शिक्षण तथा प्रशिक्षण को उद्देश्य केन्द्रित बनाया जा सकता है।

(4) शिक्षण क्रियाओ को उद्देश्यपूर्ण बनाया जा सकता है।

(5) शिक्षण सिद्धान्तो का विकास भी इस उपागम द्वारा किया जा सकता है।

(6) व्यवस्था उपागम द्वारा शिक्षक को उसके कर्तव्यो के प्रति अधिक जागरूक तथा प्रोत्साहित किया जा सकता है।

(7) व्यवस्था उपागम द्वारा शिक्षण की समस्त क्रियाओ मे समन्वय स्थापित किया जा सकता है।

(8) शिक्षण - अधिगम व्यवस्था मे शिक्षक सहायक सामग्री के चयन और विकास करने मे सहायता मिलती है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

दर्शन अर्थ सांख्य, योग एवं अद्वैत दर्शन

उ० - 'दर्शन' का पाश्चात्य जगत मे अर्थ :- पाश्चात जगत मे दर्शन का नाम फिलासफी है। फिलासफी दो ग्रीक शब्दो पहला फिलास यानि प्रेम, अनुराग तथा दूसरा सोफिया यानि ज्ञान के योग से बना है जिसका अर्थ ज्ञान से प्रेम है। पैरिक्लीज ने सर्वप्रथम इस शब्द का प्रयोग किया। सुकरात ने उक्त अर्थ से हटकर अपने को फिलासफर कहा अर्थात वह व्यक्ति जो जीव, जगत ईश्वर, धार्मिक, सामाजिक तत्वो की खोज बीन मे संलग्न रहता है। पश्चिम जगत मे प्रारम्भ मे विज्ञान का अध्ययन भी फिलासफी के अन्तर्गत किया जाता था किन्तु आधुनिक युग मे विज्ञान को पृथक ज्ञान-क्षेत्र का दर्जा दे दिया आज पश्चिम जगत मे फिलासफी मे जगत, जीव, ईश्वर आदि का अध्ययन किया जाता है। बर्ट्रेण्ड रसैल के अनुसार दर्शन का मुख्य उद्देश्य "ज्ञान की प्राप्ति है।" हरबर्ट स्पेन्सर दर्शन को सार्वभौमिक विज्ञान के रूप मे प्रत्येक से सम्बन्धित मानते है। आर॰ डब्ल्यू॰ सेलर्स दर्शन को एक व्यवस्थित विचार द्वारा विश्व और मनुष्य की प्रकृति के विषय मे ज्ञान प्राप्त करने का निरन्तर प्रयास मानते है। रॉस ने लिखा है - "वे सब लोग जो सत्यता एवं साहस से प्रकृति, मनुष्य, वस्तु, ईश्वर,

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

ब्रह्माण्ड व आत्मा आदि के रहस्यों तथा इनके पारस्परिक सम्बन्धों का उत्तर देने का प्रयास करते है और जिन उत्तरों मे कुछ सुसंगति तथा तर्कबद्धता होती है वे दार्शनिक होते हैं, चाहे वे भौतिकवादी, धर्मशास्त्री हो।"

सारांश यह है कि पश्चिम जगत मे दर्शन जीवन के विभिन्न पक्षो संबंधी ज्ञान की खोज है जबकि भारतीय जगत मे दर्शन अनुभूति का विषय रहा और उस अनुभूति के आधार पर अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति भी इसी विषय के अन्तर्गत मानी जाती रही है। जहां तक मनुष्य जगत, जीव, प्रकृति आदि का प्रश्न है पाश्चात्य एवं भारतीय दोनो दृष्टियाँ इनके स्वरूप एवं पारस्परिक संबंधो को खोजती रही है और उसके आधार पर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के स्वरूप एवं मनुष्य की भूमिका का निर्धारण करती रही।

UNITED SECULAR SOCIETY

दर्शन की परिभाषा

1) जॉन डीवी ने कहा है कि "जब भी दर्शन का गम्भीरता से चिन्तन करेंगे तभी उसके ज्ञान का प्रभाव जीवन पर पड़ेगा।

2) आर॰ डब्ल्यू॰ सैलर्स के शब्दों में – "दर्शन उस निरन्तर प्रयास को कहते हैं, जिसके द्वारा हम अपनी और

Scanned with CamScanner

संसार की प्रकृति के सम्बन्ध मे क्रमबद्ध ज्ञान द्वारा एक सूक्ष्म दृष्टि प्राप्त करने की चेष्टा करते है।

शिक्षा क्या है?

शिक्षा एक सविचार प्रक्रिया है, जिसका कार्य दार्शनिक मान्यताओं के अनुरूप समाज तथा व्यक्ति का निर्माण करना है। जे. एस. मैकेन्जी ने ठीक ही कहा है – "शिक्षा जीवन-पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। आनुभविक विकास से इसमे अभिवृद्धि होती है। इस प्रकार वह जीवन का साध्य है।"

शिक्षा एवं दर्शन का परस्पर सम्बन्ध

शिक्षा जड़ नही, अपितु एक चेतन तथा स्वेच्छित द्विमुखी प्रक्रिया है। इस दृष्टि से शिक्षा के लिये दो व्यक्तियों का होना परम आवश्यक है – एक शिक्षक और दूसरा बालक। शिक्षक के कुछ आदर्श, मूल्य तथा विश्वास होते है और बालक इन सबसे प्रभावित होता है। दूसरे शब्दो मे शिक्षक एक दार्शनिक है, जो अपने दर्शन के अनुसार बालक के विभिन्न पक्षो को विकसित करके वांछित लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है। इस प्रकार शिक्षा एक प्रत्यक्ष साधन है, जिसके द्वारा दर्शन के निर्धारित किये गये लक्ष्यो को प्राप्त किया जाता है। एडम्स ने ठीक ही लिखा है – "शिक्षा दर्शन का क्रियाशील पक्ष है।

यही दार्शनिक चिन्तन का एक सक्रिय पहलू है।"

दर्शन तथा शिक्षा के उद्देश्य

(अ) शिक्षा के उद्देश्यों का दर्शन द्वारा निर्माण :- शिक्षा का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है इसीलिये शिक्षा को एक सोद्देश्य प्रक्रिया कहा गया है। ध्यान देने की बात है कि शिक्षा का प्रत्येक उद्देश्य जीवन के उद्देश्य पर आधारित होता है और जीवन का उद्देश्य अपने समय के दर्शन से प्रभावित होता है। अतः शिक्षा के उद्देश्य का निर्माण जीवन के उद्देश्य अथवा जीवन के दर्शन के अनुसार किया जाता है। चूंकि जीवन के उद्देश्य अपने समय के जीवन दर्शन के अनुसार बदलते रहते है, इसीलिये जो कुछ भी जीवन का उद्देश्य होता है वही शिक्षा का भी उद्देश्य बन जाता है।

(ब) यूरोप तथा भारत मे शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण :-
यूरोप तथा भारत मे प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक की शिक्षा के उद्देश्यों के उदाहरणों पर विचार करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि दर्शन का शिक्षा के उद्देश्यों पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

निम्न पंक्तियों मे हम इसी संबंध मे प्रकाश डाल रहे है -

(1) प्राचीन युग :- सबसे पहले प्राचीन स्पार्टा का उदाहरण लीजिये। स्पार्टा पर शत्रुओं का आक्रमण होता रहता था। इन आक्रमणकारियों से टक्कर लेने के लिए राज्य को शक्तिशाली योद्धाओं की आवश्यकता बनी रहती थी। अतः प्राचीन स्पार्टा के जीवन का उद्देश्य अथवा जीवन दर्शन यही बन गया था कि जीवन एक संघर्ष है। जीवन के इस उद्देश्य से प्रभावित होकर वहाँ की शिक्षा का उद्देश्य बालकों मे देश-प्रेम, उत्साह, साहस तथा आज्ञा पालन की भावना विकसित करना एवं उनमे शारीरिक शक्ति को उत्पन्न करके ऐसे बलवान योद्धाओं का निर्माण करना था, जो युद्ध कला मे निपुण हो।

(2) मध्य युग :- मध्य युग के जीवन दर्शन मे अनेक उतार-चढ़ाव आये। इससे जीवन के लक्ष्य बदल गये, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा के उद्देश्य भी बदल गये। उस समय चारो ओर ईसाई धर्म का प्रचार हो रहा था। इससे शिक्षा मे भी धर्म का ही समावेश हो गया। दूसरे शब्दों मे, जीवन के उद्देश्यों के बदलने के साथ-साथ शिक्षा के उद्देश्यों पर भी धर्म की छाप लग गई। परिणामस्वरूप बालकों मे आत्मसंयम की भावना विकसित करना, उनके शरीर को यातनाये देना तथा बाइबिल के उपदेशों

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

को बिना सोचे - विचारे स्वीकार करना शिक्षा के उद्देश्य बन गये। शनैः शनैः मार्टिन लूथर ने अपने प्रभावशाली भाषणों के द्वारा जनता के सामने यह सिद्ध कर दिखाया कि प्रचलित कैथोलिक धर्म में विश्वास करना ठीक नहीं है।

(3) <u>आधुनिक युग</u> :- आधुनिक युग में लोगों का जीवन दर्शन फिर बदल गया। परिणामस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में भी क्रान्तिकारी परिवर्तन होने लगे। जॉन लॉक तथा रूसो जैसे दार्शनिकों ने पुरानी विचारधाराओं का घोर विरोध किया और इस बात पर बल दिया कि बालक के व्यक्तित्व की उपेक्षा न करके उसकी मूल-प्रवृत्तियों को स्वतन्त्रतापूर्वक विकसित होने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान किये जायें। इससे शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति का जन्म हुआ। जैसे-जैसे शिक्षा में इस प्रवृत्ति का विकास होता गया, वैसे-वैसे शिक्षा बालक प्रधान होती चली गई। 15 अगस्त सन् 1947 ई. को भारत अंग्रेजी नियन्त्रण से मुक्त हुआ। अब हमारा लक्ष्य समाजवादी ढंग से जनहितकारी राज्य स्थापित करना है। अतः बदलते हुए जीवन दर्शन तथा देश की बदलती हुई आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अब हमारी शिक्षा का उद्देश्य उत्तम नागरिकों का निर्माण करना है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भिन्न-भिन्न देशों तथा भिन्न-भिन्न कालों में शिक्षा के उद्देश्य भिन्न-भिन्न विचारधाराओं

Scanned with CamScanner

के अनुसार सदैव ही बदलते रहे और आगे भी बदलते रहेंगे।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

प्र० गांधीजी के शिक्षा दर्शन की संक्षिप्त विवेचना कीजिये।

उ० -

गांधीजी का शिक्षा दर्शन

महात्मा गांधी जिस किसी भी सिद्धान्त की बात करते थे, उसे पहले करके देखते थे। गांधीजी का शिक्षा दर्शन तथा पद्धति समय - समय पर किये गये प्रयोगों का परिणाम थी।

- महात्मा गांधी ने टालसटाय आश्रम में एक अखबार निकाला। आश्रम के प्रेस में वह छपता था। प्रेस को केन्द्र मानकर उन्होंने शिक्षा के प्रयोग स्वयं अपने एक आश्रम के बच्चों पर किए।
- महात्मा गांधीजी का शिक्षा दर्शन उनके जीवन दर्शन से प्रभावित था।
- महात्मा गांधीजी को विद्यमान शिक्षा प्रणाली के प्रति असन्तोष था।
- महात्मा गांधी यह मानकर चलते थे कि भारत का सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक कल्याण शिक्षा की पुनर्रचना से भी सम्भव है।

गांधीजी के शिक्षा दर्शन की प्रमुख विशेषताएँ

शिक्षा दर्शन में आदर्शवाद ।- महात्मा गांधी का सम्पूर्ण शिक्षा - दर्शन

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

आदर्शवाद की प्राप्ति के लिए है। वे स्वयं आध्यात्मिकता मे विश्वास रखते थे उनका कहना है - "यह जीवन का अन्तिम लक्ष्य ईश्वरोपलब्धि है। मानव की सभी क्रियायें - सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक ईश्वर दर्शन से निर्देशित होती है।"

- व्यावहारिक शिक्षा दार्शनिक :- महात्मा गांधी की यह विशेषता थी कि वे आचार तथा विचार मे सदैव सन्तुलन रखते थे। वह पहले प्रयोग करते थे, उसी के आधार पर अपने विचारो को व्यक्त करते थे।

- गतिशील शिक्षा दर्शन :- महात्मा गांधी का शिक्षा दर्शन उनके सम्पूर्ण जीवन दर्शन का गतिशील पहलू था। उन्होने अपने शिक्षा दर्शन मे जीवन के सभी पहलुओ को लिया है। उद्देश्य से लेकर परिणाम तक उन्होने अपने विचार व्यक्त किए है।

- बालक महत्वपूर्ण :- बापू के शिक्षा - दर्शन मे बालक को साधन से महत्वपूर्ण माना गया है। सारी शिक्षा ही बालक को दी जाती है साधन तो साधन ठहरे।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

- सच्ची शिक्षा :- महात्मा गांधी ने बालक को सच्ची शिक्षा देने का प्रस्ताव रखा है। उनके विचार में - शिक्षा से मेरा तात्पर्य, बालक तथा मनुष्य के सर्वांगीण विकास - शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा से है।

- उद्योग केन्द्रित :- गांधीजी ने करके सीखने की विधि का अनुकरण करते हुए शिक्षा को उद्योग - केन्द्रित किया है। बालक जो भी सीखे, वह उद्योग केन्द्रित हो। उद्योग केन्द्रित प्रशिक्षण का आर्थिक तथा शैक्षिक दोनों प्रकार का महत्व होता है। शिक्षा का मूल्य मानव के सम्पूर्ण विकास में निहित होता है। यह उद्योग के द्वारा आत्म निर्भरता की ओर ले जाने का संकेत है।

- क्रिया तथा अनुभव :- गांधीजी के शिक्षा - दर्शन में क्रिया तथा अनुभव का स्थान बहुत है। विद्यालय कार्य, प्रयोग तथा खोज का केन्द्र स्थल होता है। इसका पाठ्यक्रम क्रिया प्रधान होता है।

- आत्म निर्भरता :- गांधीजी चाहते थे कि शिक्षा ऐसी हो, जिससे शिक्षक, विद्यालय तथा छात्र सभी अपना - अपना खर्च निकालें।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

- यथार्थ परिस्थिति :- महात्मा गांधी जी की यथार्थ परिस्थितियों के मध्य शिक्षा देना चाहते थे। उनका ऐसा विचार था कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली का प्रमुख दोष यही है कि वह जीवन के यथार्थ से परे है। उनके विचार में प्रत्येक शिक्षा - शास्त्री एवं वह व्यक्ति जो छात्रों के लिए कुछ भी करता है, उसने यह महसूस किया कि हमारी शिक्षा - प्रणाली दोषपूर्ण है। यह विधि भारत की आवश्यकता की पूर्ति नहीं करती। ग्राम एवं गृह के मध्य यह शिक्षा सम्पर्क स्थापित नहीं करती"।

गांधीजी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

- वैयक्तिक उद्देश्य - जीविकोपार्जन :- गांधीजी द्वारा स्वावलम्बन की बात करते थे। वे शिक्षा द्वारा बेरोजगारी फैलाने के कटु आलोचक थे। गांधीजी के शब्दों में "शिक्षा बेरोजगारी के विरुद्ध एक प्रकार का बीमा होना चाहिए।" इसीलिये गांधीजी ने अपनी बुनियादी शिक्षा में उद्योग- शिक्षा पर बल दिया। देश की

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

आर्थिक स्थिति को ध्यान मे रखते हुए, उन्होने शिक्षा को हस्तकला और उद्योग पर केन्द्रित करने का सुझाव दिया। गांधीजी ने देखा, व्यक्तिगत जीवन उसकी आवश्यकताओ को ध्यान मे रखकर 'शिक्षा' को सर्वप्रथम जीविका से जोड़ने का प्रयास किया, क्योंकि व्यक्ति की सबसे पहली आवश्यकता भोजन है। इस तरह गांधीजी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा का यह उद्देश्य यथार्थ के धरातल पर आधारित है।

- चरित्र निर्माण का उद्देश्य :- चरित्र निर्माण को गांधीजी शिक्षा के सर्वोच्च उद्देश्यो मे स्थान देते थे। उन्होने लिखा है कि मैने सदा हृदय की संस्कृति अथवा चरित्र को प्रथम स्थान दिया है। मैने चरित्र को बालकों की शिक्षा की उचित नींव माना और यदि नींव मजबूत पड़ जाये तो अन्य सब बाते मित्रो आदि की सहायता से बच्चे स्वयं सीख सकते है। चरित्र निर्माण मे गांधीजी ने मन, वचन, कर्म की पवित्रता तथा सत्य एवं अहिंसा पर जोर दिया। वे ब्रह्मचर्य को विद्यार्थी जीवन के लिये आधार मानते थे। विद्यार्थी को ब्रह्मचारी रूप मे ही देखना चाहते थे। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य व्यक्ति के व्यवहार मे परिवर्तन है

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

और यदि यह परिवर्तन अभीष्ट दिशा में न हो अर्थात वांछित व्यवहार परिवर्तन न हो, तो शिक्षा देने का अर्थ ही क्या है। यही कारण है कि 'चरित्र निर्माण' के उद्देश्य पर गांधीजी ने बहुत बल दिया।

- सर्वांगीण विकास का उद्देश्य :- गांधीजी ने शरीर, मन आत्मा के सर्वांगीण विकास की बात अपनी परिभाषा में कही है। इससे स्पष्ट है कि 'वे व्यक्ति का सर्वांगीण एवं समन्वित विकास चाहते थे।'

- आध्यात्मिक विकास का उद्देश्य :- गांधीजी शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष 'मोक्ष' मानते थे। उन्होंने मानव के विभिन्न पक्षों में से आत्मा को शाश्वत एवं चिरन्तन तत्व माना। अतः सर्वोच्च लक्ष्य आत्मिक विकास पर बल दिया और इस विकास से ही व्यक्ति समस्त राग-द्वेषादि से मुक्त होकर मुक्ति के लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

- नैतिक उद्देश्य :- गांधीजी नैतिक शिक्षा को प्राथमिकता देना चाहते थे। उनसे एक बार प्रश्न पूछा गया। स्वाधीन भारत में शिक्षा का क्या उद्देश्य होना चाहिए। उत्तर दिया -

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

"चरित्र निर्माण। इससे साहस का विकास होगा, इसके शक्ति, गुण, एकता योग्यता के उद्देश्यों की प्राप्ति होगी। यह साक्षरता से अधिक महत्व का है। बौद्धिक प्रशिक्षण जो इस महान कार्य का एक भाग है, शिक्षा का समापन चरित्र निर्माण से होना चाहिए।"

– **सामाजिक उद्देश्य** :- गांधीजी की परिभाषा से स्पष्ट है कि उन्होंने शिक्षा के व्यक्तिगत उद्देश्यों पर बल दिया किन्तु गांधीजी के सर्वोदय - दर्शन के अनुसार व्यक्ति को समाज से पृथक कर सोचना सम्भव नहीं है। अतः उनकी मान्यता है कि 'व्यक्ति का श्रेय, समष्टि के श्रेय में निहित है।' इस तरह हम देखते है कि गांधीजी ने व्यक्तिगत उद्देश्यों की चर्चा में समाज से अलग करके इन उद्देश्यों की कल्पना नहीं की। अतः गांधीजी के अनुसार शिक्षा के सामाजिक उद्देश्य भी है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner